पीड़ा

डॉ. रमेश टण्डन

Scanned with OKEN Scanner

कवि

डॉ. रमेशकुमार टण्डन
माता-श्रीमती फूलकुँवर टण्डन (निरक्षर)
पिता-श्री कौशलप्रसाद टण्डन (निम्न मध्यम वर्गीय किसान)
जन्म-03 जनवरी 1975
स्थान-ग्राम-फूलबंधिया
जिला- रायगढ़ (छ.ग.)
शिक्षा- एम. ए. (हिन्दी, अंग्रेजी), पी-एच. डी. (हिन्दी)
सेट (हिन्दी)
धर्मपत्नी- श्रीमती पूर्णिमा टण्डन उर्फ पुरान (गृहिणी)
संतान- सरकारी विद्यालय में अध्ययनरत
सम्पति - 1. काव्य-संग्रह ''पीड़ा''
2. हरिद्वार, जयपुर, वाराणसी, भिलाई व बिलासपुर की अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं में एवं मेरठ, भिलाई व बिलासपुर की राष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं में शोध-पत्रों का निरन्तर प्रकाशन।
3. राष्ट्रीय शोध-संगोष्ठियों एवं कार्यशाला में सहभागिता।
4. समाचार पत्रों में कविता-प्रकाशन।
सम्प्रति-सहायक प्राध्यापक (हिन्दी)
अतिरिक्त प्रभार- एनसीसी अधिकारी क्रीड़ाधिकारी
महात्मा गांधी शासकीय कला एवं विज्ञान महाविद्यालय खरसिया
जिला- रायगढ़ (छ.ग.)

Scanned with OKEN Scanner

प्रियंका पब्लिशिंग हाऊस
प्लॉट न.–26, 9 दुकान, पानीपेच, झोटवाडा रोड,
जयपुर (राजस्थान)–302016
M. 8955019001, 9636691655

© प्रकाशक

मूल्य रू : 325.00

ISBN : 978-81-929520-9-3

संस्करण : 2014

मुद्रक:
रूचिका प्रिन्टर्स, जयपुर - 302019
मो. : 9829034866, 9829600472

Scanned with OKEN Scanner

विषय–सूची

1. पहचान की पीड़ा
2. पद की पीड़ा
3. पैसे की पीड़ा
4. परिधान की पीड़ा
5. पेपर की पीड़ा
6. पीड़ा
7. प्रकृति की पीड़ा
8. प्रलय की पीड़ा
9. पेड़ की पीड़ा
10. पवन की पीड़ा
11. पुष्प की पीड़ा
12. परिवहन की पीड़ा
13. पशु की पीड़ा
14. प्रभात की पीड़ा
15. परमेश्वर की पीड़ा
16. पुरूषार्थ की पीड़ा
17. परीक्षा की पीड़ा
18. प्रांत की पीड़ा
19. प्रजा की पीड़ा
20. प्रधान की पीड़ा
21. पायल की पीड़ा
22. प्रेम की पीड़ा
23. प्रसाद की पीड़ा
24. परम पीड़ा

Scanned with OKEN Scanner

वे
जब तक थे,
उनके प्रति समर्पण का भाव
नहीं आया;

उनके
चले जाने के बाद
एकाएक
उन्हें
यह पुस्तक
समर्पित कर दूँ।

नहीं!
कदापि नहीं!!
बिल्कुल नहीं!!!

अभिन्न से निरंतर मिलन,
अल्प भिन्न से दूरभाष वार्ता,
मात्र भिन्न को
यह पुस्तक
भेंट।

Scanned with OKEN Scanner

मानव बनने की कोशिश में यह कवि.....

भारत देश के छत्तीसगढ़ प्रांत में रायगढ़ जिले के अन्तर्गत एक गाँव बसता है– फूलबंधिया। खरसिया जनपद के इस गाँव में 03 जनवरी 1975 को माँ फूलकुँवर टण्डन के कोख से एक बालक ने जन्म लिया। कनिष्ठ पुत्र के रूप में पाकर पिता कौशलप्रसाद टण्डन की खुशी का ठिकाना न रहा।

जन्म ग्राम की प्राथमिक शाला में बिना भवन के, पाँचवी कक्षा तक की शिक्षा अर्जित करने के पश्चात् हाई स्कूल का अध्ययन नजदीकी ग्राम सोण्डका में सम्पन्न हुआ। हायर सेकेण्डरी की पढ़ाई डभरा में पूरी करने के बाद मात्र 18 वर्ष 06 माह की अवस्था में छत्तीसगढ़ शासन के शिक्षा विभाग में सहायक शिक्षक की नौकरी पर लग गए। पाँचवी को प्रथम श्रेणी में, आठवीं को प्रथम श्रेणी में, दसवीं को प्रथम श्रेणी में, बारहवीं को प्रथम श्रेणी में, स्नातक (अमहाविद्यालयीन) को प्रथम श्रेणी में, स्नातकोत्तर–हिन्दी (अमहाविद्यालयीन) को प्रथम श्रेणी में तथा छत्तीसगढ़ पात्रता परीक्षा सेट को उत्तीर्ण करने वाले पी–एच.डी. डिग्री धारी डॉ. रमेश टण्डन एम.ए.– अंग्रेजी भी हैं।

आप छत्तीसगढ़ लोक सेवा आयोग के द्वारा सहायक प्राध्यापक (हिन्दी) के पद पर चयनित एवं मंत्रालय उच्च शिक्षा विभाग, छ.ग.शासन के द्वारा दिनांक 21 नवम्बर 2012 से महात्मा गांधी शासकीय कला एवं विज्ञान महाविद्यालय खरसिया जिला– रायगढ़ (छ.ग.) में पदस्थ हैं। स्नातक के आधार पाठ्यक्रम (हिन्दी भाषा) तथा हिन्दी साहित्य एवं स्नातकोत्तर (हिन्दी साहित्य) के अध्यापन के साथ–साथ आप वर्तमान में एन सी सी अधिकारी एवं क्रीड़ाधिकारी के दायित्व का भी निर्वहन कर रहे हैं।

ग्रामीण अंचल से अनवरत् कई वर्षों तक जुड़े रहने एवं निम्न मध्यम वर्ग परिवार से पोषित होने के कारण आपने

Scanned with OKEN Scanner

विभिन्न परिस्थितियों को गहराई एवं नजदीक से देखा है। साथ में माध्यमिक एवं हाई स्कूल की शिक्षा ग्रहण करते समय तेंदु पत्ते से बीड़ी बनाने (एक कुटीर उद्योग) का भी काम किया है। इसलिए काम करते हुए ज्ञानार्जन के महत्त्व को आपने जाना है। बिना विद्युत के, चिमनी में, कभी चारपाई में तो कभी जमीन पर बिना बिछावन के पढ़ना; बिना चप्पल के पैदल कई किलोमीटर की दूरी चलकर विद्यालय जाना, बरसात में बिना छाता के, ये सभी आपकी शिक्षा के अंग रहे हैं।

आप जीवन संगिनी श्रीमती पूर्णिमा टण्डन, आत्मजा–हेमलता देवलता, डिम्पल सिम्पल एवं आत्मज–सानिध्य संग जन्म ग्राम में खुशहाल जीवित हैं। कदा– कदा विश्व, समाज, पर्यावरण, व्यवस्था व मानवीय मूल्यों पर पीड़ा का अनुभव करते हैं और उस समय आपके अंदर छिपा बैठा कवि लेखनी थाम लेता है।

जब संसार के समस्त जड़ और चेतन की पीड़ा की अनुभूति एक आम मनुष्य को हो और वह पीड़ा पाठक के समक्ष साहित्य के रूप में प्रकट हो, तब वह मनुष्य आम नहीं रह जाता, वह आम से खास हो जाता है, लघु मानव से मानव हो जाता है। आपकी परिस्थितियों ने निश्चित रूप से आपको विचारवान बना दिया है। "आपके दिल से निकली हुई हर पीड़ा के अश्रु ने आपको भिगोकर भावुक, शीतल, नम्र, भावग्राही, दयावान एवं सहिष्णु बना दिया है और मानव के समीप ला खड़ा कर दिया है", ऐसा कहना निस्सार नहीं होगा। वैसे आज, आमतौर पर मानव, मानव नहीं रह गया है। मानव एक क्षुद्र जीव है जिसके पास मानव की तरह गुण होने को छोड़कर अन्य सारे लक्षण विद्यमान हैं। मानव की कसौटी पर खरा उतरने के लिए उसमें मानवता के सम्पूर्ण गुण विद्यमान होने चाहिए।

Scanned with OKEN Scanner

कवि–कलम से.....

इन दिनों मैं एक विशेष प्रकार की तकलीफों से जूझ रहा हूँ। जब दिल्ली में दिसम्बर 2012 में निर्भया के साथ दुष्कृत्य हुआ, तब जनवरी 2013 का स्वागत मैं किस तरह करूं, यह समझ में नहीं आया। फिर 31 दिसम्बर 2012 की रात 03 बजे, 2013 का स्वागत मैंने इस प्रकार किया–

दर्दे–दिल, दिल्ली दफन हुई, उजड़ा दामिनी डेरा।
पलकें नम, सहमे तन, स्वागत दो हजार 13 ।।

सूर की आगजनी वही,
चांद की चांदनी वही,
बस बदला हुआ सपना है।
औरत की बेबसी वहीं,
राजनीति भी फँसी वहीं,
बस रोते हुए हँसना है।।
हँसी भी झूठी, सपना भी झूठा, झूठा नया सबेरा।
पलकें नम, सहमे तन, स्वागत दो हजार 13 ।।

स्वाद वही,
शराब वही,
बस बदल गया रसना है।
नकाब वही,
फसाद वही,
बस धीरे–धीरे हँसना है।।
रस भी झूठा, सरफांस भी झूठा, झूठा पुलिस का घेरा।
पलकें नम, सहमे तन, स्वागत दो हजार 13 ।।

बलात्कार वही,
गठबंधन सरकार वही,
बस चेहरा बदल गया।

Scanned with OKEN Scanner

दहेज की बात वही,
लगन–बारात वही,
बस सेहरा बदल गया।।
चेहरा भी झूठा, सेहरा भी झूठा, झूठा तेरा बसेरा।
पलकें नम, सहमे तन, स्वागत दो हजार 13 ।।

फाग पिचकारी वही,
दफ्तर सरकारी वही,
बस दूषित सोच हो–ली।
पटाखे रंग वही,
अन्ना की जंग वहीं,
बस ज्योति बिन दिवा–ली।।
होली भी झूठी, दिवाली भी झूठी, झूठा है छेर–छेरा।
पलकें नम, सहमे तन, स्वागत दो हजार 13 ।।

कविता वनिता वही,
कहानी रूमानी वही,
बकवास सारी रचना है।
अपराधी के काटो अंग,
छेड़ो जंग,
बस यही कहना है।।
रचना भी झूठी, कथा भी झूठी, ये है जंग की बेरा।
पलकें नम, सहमे तन, स्वागत दो हजार 13 ।।

इस तरह कभी जड़, तो कभी चेतन की पीड़ा; कभी मानव, तो कभी पशु–मन की पीड़ा मन से आँखों के रास्ते छलक पड़ती है। गायत्री मन्त्र में जितने अक्षर होते हैं, उतनी कविताएँ इस संग्रह में स्थान पायीं एवं मेरी पीड़ा के एक–एक भाव को शब्द प्रदान कीं। सर्वप्रथम, मैंने इस खुशामदी दुनिया के बीच प्रतिभाशाली लोगों की, गुम होती पहचान को पीड़ा के रूप में स्याही दी है एवं भारत देश की, मरणोपरान्त पुरस्कार देने की परम्परा को उकेरा है। द्वितीय कविता में; किसी नशेबाज, रिश्वतखोर, अयोग्य व्यक्ति द्वारा पदासीन होने पर उस पद की गरिमा लज्जित होती है; को ध्यान में लाया गया है।

Scanned with OKEN Scanner

तृतीय पद्य में; आर्थिक विषमता से उत्पन्न वर्ग विषमता एवं धन के असमान वितरण से पैसे के हो रहे दुरुपयोग को रेखांकित किया गया है। परिधान की पीड़ा में, पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव से भारत की वैदिक कालीन नारियों की लजाती परिधान–परम्परा को कलमबद्ध करने का प्रयास किया गया है। पेपर की पीड़ा में, समाचार–पत्रों के पठन पश्चात् सही रख–रखाव नहीं होने की दशा पर चिंता जताई गई है।

'पीड़ा' में, जो कि इस काव्य–संग्रह का शीर्षक भी है, यह बताने की कोशिश की गई कि दिन–पर–दिन गुजरते जाते हैं, मास–पर–मास गुजरते जाते हैं, साल–पर–साल गुजरते जाते हैं, परन्तु सब कुछ लगभग वही रहता है। सन् 2010 से 2011 आया, 2011 से 2012 आया, फिर 2013 आया, 2014 आया; सन् 2014 से 2015 आयेगा, 2015 से 2016 आयेगा, 2017 आयेगा। न पहले बदला, न आगे बदलेगा; यही, पीड़ा का कारण है। चूँकि परिवर्तन, संसार का नियम है इसलिए समय बीतने के साथ–साथ हमारे व्यवहार में, हमारी सोच में आमूल–चूल परिवर्तन न सही, उसी रूप में पर विकास की ओर, प्रगति की ओर एवं श्रेष्ठ रूप में परिवर्तन होना चाहिए।

प्रकृति की पीड़ा में, 16 जून 2013 को बद्रीनाथ एवं केदारनाथ (उत्तराखण्ड) में बादल फटने से हुई विशाल जन–धन की हानि को पाठक के समक्ष रखा गया है। प्रलय की पीड़ा में, यह मनोभाव व्यक्त किया गया है कि प्रलय में सब कुछ डूब जाये तो डूब जाये पर गरीब, मासूम, असहाय को उनके परिश्रम के बदौलत मिलने वाला थोड़ा–सा सुख भले ही वह अल्पकालीन हो, न डूबे। साथ में सत्य, प्रेम भी प्रलय के पश्चात् शेष बने रहे। पेड़ की पीड़ा में, पेड़ और बीज के कष्टपूर्ण संवाद को पिता और पुत्र के संवाद के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इसमें पेड़ की अंधाधुंध कटाई से पूरे विश्व में उत्पन्न पर्यावरण के संकट को निरूपित करते हुए इसके लिए मनुष्य को जिम्मेदार ठहराया गया है। पवन की पीड़ा में, पवन के भाव को ग्रहण किया गया, साथ में स्वच्छ वायु में कारखाना जनित प्रदूषित या जहरीली गैस के मिश्रण होने से पूरे वातावरण का मानव–जीवन के लिए हानिकारक होने को अभिव्यक्ति दी गई है।

पुष्प ने स्वयं को शहीद पुत्र की माँ के कदमों पर अर्पित होने की ईच्छा प्रकट की एवं शर्मनाक–साधू, बलत्कारी बाबा, राजसी–राजनयिकों से दूर रहने के मनोभाव को व्यक्त किया। वाहन–चालन के समय मस्ती

Scanned with OKEN Scanner

करने, हेल्मेट न पहनने, यातायात के नियमों का पालन न करने, सावधानी न बरतने आदि कई बातों की अभिव्यक्ति परिवहन की पीड़ा में हुई है। जुबानहीन पशु की पीड़ा में मर्महीन मानव द्वारा अपनी कमजोरी के लिए पशुओं का गलत इस्तेमाल किए जाने को शब्द मिला है। जिस तरह मानवता, मानव के गुण को प्रकट करती है; क्या उसी तरह पशुता, ... ; इसके लिए पढ़ें यह कविता। प्रभात की पीड़ा में लोगों द्वारा एक–दूसरे को सुप्रभात करने के साथ ही पूरे दिन के शुरू (अच्छे) होने के बजाय कुछ (बुरा) होने की ओर इशारा किया गया है।

धार्मिक मान्यता अनुसार परमेश्वर ने इस दुनिया को बनाया है। अपने निर्माण की दुर्दशा, भिन्नता, विषमता व विचित्रता को देखकर परमेश्वर की पीड़ा भी इस काव्य संग्रह में अभिव्यक्ति पायी है। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के सही अर्थ ग्रहण न करके पूरे पुरूषार्थ से पथहीन होकर मानव के पशु तुल्य होने को पुरूषार्थ की पीड़ा में पद मिले हैं। उपाधि के लिए परीक्षा हो, या किसी पद पर भर्ती की परीक्षा हो, कहीं–न–कहीं गड़बड़ी के आरोप लगे हैं; इसी बात को परीक्षा की पीड़ा में उभारा गया है। विश्व परिवार के अंश प्रान्त को इस बात की पीड़ा है कि उसे क्षेत्र में जकड़ दिया गया है। प्रान्त ने इस पर यह आह्वान किया कि–

संयुक्त राष्ट्र के सारे नेता।
मिल जुल करें ये तय।।
न क्षेत्र पर लड़ें, न धर्म पर।
न हो आतंक का भय।।
सर्व जन मिल गाएँ गीत।
विश्व का, हो तन्मय।।
विश्व बन्धुत्व हो, और हो।
एक सुर, एक लय।।
भारत माता के साथ हो।
विश्व विधाता की जय।।

वयस्क मताधिकार को ध्यान में रखकर भारतीय प्रजा की पीड़ा का उल्लेख काव्य संग्रह में आया है, इसमें मतदान की प्रक्रिया में सुधार की आवश्यकता पर बल दिया गया है। प्रधान की पीड़ा में किसी राज्य के मुखिया

Scanned with OKEN Scanner

की पीड़ा की कल्पना की गई है। अकेले के कर्त्तव्य–बोध एवं अपने अधिकार के प्रति जागरूक हो जाने मात्र से देश का वर्तमान एवं भविष्य स्वर्णिम नहीं हो जाता, इसके लिए पूरी टीम को सच्चाई की धरातल पर उतरना होगा। पायल की पीड़ा में सौभाग्यकांक्षिणी की अरमान व सौभाग्यवती की पहचान 'पायल' नामक आभूषण को दूसरी पायल नाम की नारी ने पहना है। इस आभूषण को तोड़ने वाली मर्द जाति जो दरिन्दे किश्म के होते हैं, को इस कविता में कोसा गया है। प्रेम की पीड़ा में प्रेमी, प्रेमिका, माँ, बाप व देश में क्रमशः प्रेमिका, प्रेमी, संतान, पुत्री व देशवासी के लिए निहित प्रेम एवं प्रत्युत्तर में प्राप्त फल को अंकित किया गया है।

अपने ईष्ट से कृपा–प्रसाद प्राप्त करने वाला दुर्भावनाग्रस्त हो सकता है, सद्भावनापूरित भी हो सकता है। दुरूपयोग या सद् उपयोग की भावना से अपरिचित प्रसाद की इसी पीड़ा को कविता का मुख्य आधार बनाया गया है। परम पीड़ा में यह अभिव्यक्ति दी गई है कि यदि अंधे, गूंगे व बहरे कुछ न कर पाये तो वह उनके अपूर्ण अंगों के कारण है एवं इससे जनित पीड़ा उनका करम है। परन्तु जब पूर्ण आँखों वाला, जुबान वाला, सुन सकने वाला, बुद्धिमान, शिक्षक, पुलिस, न्यायाधीश, नेता, अधिकारी, सन्त, चिकित्सक, वकील, अभियन्ता, पत्रकार एवं लेखक–कवि यदि अपने कर्त्तव्य को न करें, ऐसा नहीं, अपितु गलत करें तब प्रत्युत्पन्न पीड़ा परम होती है।

इस 'पीड़ा' नामक काव्य संग्रह की रचना में, मुझे प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से समस्त घटनाओं या कहें समस्त दुर्घटनाओं ने विषय–वस्तु दी। इसके लिए इनसे जुड़े हर किश्म के लोगों को धन्यवाद देता हूँ। कोई घटना छूट गयी हो, तो उसका विशेष रूप से ऋणी हूँ क्योंकि वह घटना अभी पूरे वेग से घटी नहीं या वह घटना मुझे पूर्ण रूप से उद्वेलित नहीं कर पायी। विश्वास दिलाता हूँ, आने वाले समय में उन अवर्णित दोषों को शब्द अवश्य मिलेंगे।

प्रबुद्ध पाठकों से अनुरोध है कि मेरे जो विचार उनसे मेल नहीं खाते, वे मेरे निजी हैं; अतः अन्यथा न लें। जिनके विचार मिलते हों, उन्हें बहुत–बहुत बधाई।

आपके विचार एवं सुझाव हमेशा आमंत्रित रहेगा।

साधुवाद।

खरसिया,

21 अगस्त, 2014 ई0

रमेश टण्डन

Scanned with OKEN Scanner

पहचान की पीड़ा

ये जिंदगी किसकी अमानत,
किसने किया अहसान, सोचता हूँ।
दानवी दुनिया की भीड़ में,
मैं अपनी पहचान खोजता हूँ।।

दूध – खून का कर्ज विस्मृत,
और मिटा अस्तित्व।
'स्वत्व' साकार का सपना संजोये,
पर सिमटा व्यक्तित्व।।
किसकी उम्मीद हूँ मै,
क्या है मेरी अरमान, सोचता हूँ।
दानवी दुनिया की भीड़ में,
मैं अपनी पहचान खोजता हूँ।।

मस्तिष्क को नहीं मिला महत्त्व,
न मन को मिला मान।
मासूमियत मानवता मिटा दी गई,
ममता की लूटी आन।।
मक्कारों की हमेशा तूती बोलती,
इनसे रहूँ सावधान, सोचता हूँ।
दानवी दुनिया की भीड़ में,
मैं अपनी पहचान खोजता हूँ।।

मैं कौन हूँ ? कौन बताये,
कहाँ हूँ ? कोई राह दिखाये।
कब करूं मैं क्या काम,
किससे, कैसे पूछा जाये।।
असंख्य नामों में कौन–सा,
और क्या है मेरा नाम, सोचता हूँ।
दानवी दुनिया की भीड़ में,
मैं अपनी पहचान खोजता हूँ।।

Scanned with OKEN Scanner

पहचान खोजते–खोजते,
भूल–भूलैया में खो गया।
थक हार, लूट पिट कर,
चिर निद्रा में सो गया।।

अगले जनम में फिर आऊँगा,
स्वयं को चौक में पाऊँगा।

होगी गले में माला,
और तिलक भाल।
जयन्ती मनायेंगे लोग,
हर साल।।

जिंदगी रहते जिक्र नहीं,
करते हलाल।
मरते ही फक्र करते,
और करते सलाम।।

ऐसा ही चल रहा, देश का हाल।
मरणोपरांत पुरस्कार से मालामाल।।

–––––000–––––

पद की पीड़ा

गरिमा ने पूछा उसके पद से,
मुझे तुम्हारी खता बता दो।
वरन् जिसने तुम्हें नीचा दिखाया,
उसका पता बता दो।।

पद में दायित्व है,
कार्यभार है।
आदेश देने का भी,
अधिकार है।।
फाइलों के अधिभार से तुम दब गये,
मुझे तुम्हारी खता बता दो।
वरन् जिसने तुम्हें नीचा दिखाया,
उसका पता बता दो।

बजट का प्रावधान करते,
कैसी आर्थिक दशा है।
प्रशासनिक अमले को भी,
सारे काम का नशा है।
अधिकारी पीया शराब, तुम पतित हुए,
मुझे तुम्हारी खता बता दो।
वरन् जिसने तुम्हें नीचा दिखाया,
उसका पता बता दो।

नीचे अधिकारी ने माना नहीं,
ऊँचे ने डाँट दिया।
जनता ने समझा नहीं,
नेता ने काट दिया।।
पद की मर्यादा लज्जित हुई,
मुझे तुम्हारी खता बता दो।
वरन् जिसने तुम्हें नीचा दिखाया,
उसका पता बता दो।

Scanned with OKEN Scanner

पदानुरूप पे बैंड पाया,
ग्रेड पे भी अलग से।
महंगाई भत्ता तो निश्चित है,
फिर भी नहीं उतरा हलक से।।
अधिकारी लिया रिश्वत, तुम बदनाम हुए,
मुझे तुम्हारी खता बता दो।
वरन् जिसने तुम्हें नीचा दिखाया,
उसका पता बता दो।

पद सकुचाया,
झिझकते हुए बताया।
पद लोभी अयोग्य ने,
धन लालच दिखाया।।

साम,दाम,दंड,भेद से,
मेरे मालिक ने हथियाया।
मैं शर्मसार हुआ,
भ्रष्टाचार ने मुझे सताया।।

मैं ईमानदार कर्त्तव्यनिष्ठ, मुझे पदस्थ ने बदनाम किया।
उसके रिश्वत और नशे ने, ये सारा काम किया।।
ऐ अधिकारी ! मेरे नाम से,
अपनी पहचान बताते हो।
पद दुरूपयोग करो तुम,
और मुझ पर इल्जाम लगाते हो।।

हिदायत !!!
बनाये रखो पद–मान।
वरन् त्याग दो पद–नाम।।

यदि पद–मान न हो सका तो नौकरशाहों,
पद को मुक्त कर दो।
देश में फिर से स्वागत–राजतंत्र,
गणतंत्र को लुप्त कर दो।।

–––––000–––––

Scanned with OKEN Scanner

पैसे की पीड़ा

पैसे ने कहा, पैसे वाले से,
मेरी कुछ परवाह करो।
पैसे का दुरूपयोग न हो,
ऐसे कर्त्तव्य का निर्वाह करो।।

गरीब की रोटी सुखी,
आंगन की कुतिया भूखी।
चहुँ ओर छायी बेरूखी,
माँ बहन बिटिया दुखी।।
पैसे से गरीब की भूख मिटे,
ऐसी कुछ चाह करो।
पैसे का दुरूपयोग न हो,
ऐसे कर्त्तव्य का निर्वाह करो।।

अमीर ऐय्यास फेंके पैसा,
जैसे कचरा कूटा जाला हो।
पैसे का मोल मैल जैसा,
देख अर्द्ध वसन की बाला को।।
पैसे से अस्मत लूट ली गई,
शर्मिंदगी पर आत्मदाह करो।
पैसे का दुरूपयोग न हो,
ऐसे कर्त्तव्य का निर्वाह करो।।

पैसा जैसे मान पाता है,
गरीब के हाथ में।
वैसा कभी नहीं,अमीर के,
अभिमानी साथ में।।
अभिमानी ने जुए में हार दिया,
कुसंगति की राह हरो।
पैसे का दुरूपयोग न हो,
ऐसे कर्त्तव्य का निर्वाह करो।।

Scanned with OKEN Scanner

बीस रूपये में गरीब,
भर पेट भोजन लेता है।
उतने में एक अमीर,
पान की पीक थूक देता है।।
पैसे सबकी भूख मिटाये,
ऐसे सम भाव करो।
पैसे का दुरूपयोग न हो,
ऐसे कर्त्तव्य का निर्वाह करो।।

कोई जहाज में चलता है,
सोने की थाली में खाता है।
किसी की साइकिल भी नहीं चलती,
और ठंड भूख से अकुलाता है।।
काला धन स्विस बैंक में,
देश से ऐसे गुनाह हरो।
पैसे का दुरूपयोग न हो,
ऐसे कर्त्तव्य का निर्वाह करो।।

पैसा अकुलाया,
गवर्नर को बुलाया।

कहा –
नोट पर संख्या न लिखें,
हजार सौ पचास।
अपितु अंकित हो,
रोटी कपड़ा और आवास।।

यह वितरित हो इस आधार पर,
आदमी की संख्या और आकार पर।
अंकुश लगेगा शक्ति और अधिकार पर,
और बंदिश काला धन व्यापार पर।।

-----000-----

Scanned with OKEN Scanner

परिधान की पीड़ा

इज्जत हूँ, अस्मिता हूँ,
आम इंसान पर अहसान किया।
परिधान हूँ, परिष्कृत हूँ,
पर परिवेश ने परेशान किया।।

भुजाओं से गायब हूँ,
पीठ में खुला ज्यादा।
घुटने के नीचे बिल्कुल नहीं,
सीने में आधा।।
महानगर की नायिका ने,
अपने तन से वस्त्र दान किया।
परिधान हूँ, परिष्कृत हूँ,
पर परिवेश ने परेशान किया।।

फिल्मकारों ने हवा दी,
या खुद की पसंद भड़की।
पश्चिमी देश को दोष दें !
क्या अश्लील है विदेशी लड़की ?
विदेशी बाला ने सागर तट पर,
शरीर खुले आम किया।
परिधान हूँ, परिष्कृत हूँ,
पर परिवेश ने परेशान किया।।

फैशन शो तो श्रृंगारिक है,
श्रृंगार अधूरा बिन परिधान।
पर मापदंड बदल दिए,
नायिका निर्वस्त्र और बदनाम।।
कुछ उफनती, कुछ छलकती,
नायिका ने आयटम गान किया।
परिधान हूँ, परिष्कृत हूँ,
पर परिवेश ने परेशान किया।।

Scanned with OKEN Scanner

इंटरनेट का युग है,
आधुनिक मोबाईल कैमरे।
शीला की जवानी,
और बीयर बार में कैबरे।।
साड़ी सलवार सुप्त हुई,
लेपटाप जिंसटाप लांच किया।
परिधान हूँ, परिष्कृत हूँ,
पर परिवेश ने परेशान किया।।

परिधान फुसंफुसाया–
अंग्रेजीवाद साकार हुआ,
कामी का व्यापार हुआ।
भारतीय संस्कृति बदनाम,
और परिधान लाचार हुआ।।

कल मजबूर थे, गरीबी ने नंगा किया।
आज कामातुर से, अमीरी ने नंगा किया।।

कल आदिमानव थे, अशिक्षा और अभाव में।
आज आदिमानव हैं, फैशन के प्रभाव में।।

–––––000–––––

Scanned with OKEN Scanner

पेपर की पीड़ा

पुस्तक ने पूछा पेपर से,
मुझे तुम्हारी खता बता दो।
वरन् जिसने तुम्हें पोंछा बनाया,
उसका पता बता दो।।

सुबह होते ही आते हो हाथ,
लेकर दुनिया की खबरें और बात।
चाहे धूप हो या बरसात,
रहते हमेशा पाठक के साथ।।
तुम्हें पढ़ पाठक ने फेंक दिया,
मुझे तुम्हारी खता बता दो।
वरन् जिसने तुम्हें पोंछा बनाया,
उसका पता बता दो।।

कैरियर मंत्र और सामान्य ज्ञान हो,
देश–विदेश के अनुसंधान हो।
प्याज, लहसून के गुण बताते,
कैसे संतुलित खान–पान हो।।
समोसे खा, हाथ पोंछ फेंक दिया,
मुझे तुम्हारी खता बता दो।
वरन् जिसने तुम्हें पोंछा बनाया,
उसका पता बता दो।।

Scanned with OKEN Scanner

राजनीतिक कालम हो,
और हो विचारवान संपादकीय।
फिल्मी जगत हो या खेल,
व्यापार वाणिज्य भी पठनीय।।
व्यापारी पैकेट बना बेच दिया,
मुझे तुम्हारी खता बता दो।
वरन् जिसने तुम्हें पोंछा बनाया,
उसका पता बता दो।।

कविता, राशिफल, फेबल हो,
दीवाल की पोस्टर, लेबल हो।
विज्ञापन, शादी, टेंडर हो,
सांख्यिकी आंकड़ें के टेबल हो।।
टेबल–धूल पोंछ फेंक दिया,
मुझे तुम्हारी खता बता दो।
वरन् जिसने तुम्हें पोंछा बनाया,
उसका पता बता दो।।

शहीदों की पुण्य तिथि हो,
या जनम तेरा मेरा हो।
क्रिकेटरों के गेंद–बल्ले,
या नायिका का सुंदर चेहरा हो।।
चेहरे पर टट्टी पोंछ फेंक दिया,
मुझे तुम्हारी खता बता दो।
वरन् जिसने तुम्हें पोंछा बनाया,
उसका पता बता दो।।

Scanned with OKEN Scanner

पेपर अकुलाया,
अपनी पीड़ा को बतलाया।
दीदी! जो मेरा पोषक है,
उसी ने मुझे खाया।।
कभी वह पत्रकार है,
तो कभी लेखक– संपादक।
कभी अधिकारी, नेता,
तो कभी ट्रेन पर सवार पाठक।।

कलाकार के हाथ का फूल बना,
तो हवा में खिल गया।
बरसात में बच्चों का नाव बना,
तो पानी में फिल गया।
आपकी सुरक्षा में कवच बना,
तो धागे से सिल गया।
पर, बच्चे ने टट्टी पोंछी,
तो मान मिट्टी में मिल गया।

संपादक!
ऐसी कुछ जतन करो,
मुझ पर गोबर टट्टी मत डालो।
मेरी इज्जत न कर सको,
तो मुझे ही मत निकालो।।

----000----

Scanned with OKEN Scanner

पीड़ा

दर्दे–दिल, दिल्ली दफन हुई,
उजड़ा दामिनी1 डेरा।
पलकें नम, सहमे तन,
ये है पीड़ा की बेरा 2।।

सूर की आगजनी वही,
चांद की चांदनी वही,
बस बदला हुआ सपना है।
औरत की बेबसी वही,
राजनीति भी फँसी वहीं,
बस रोते हुए हँसना है।।
हँसी भी झूठी, सपना भी झूठा,
झूठा नया सबेरा।
पलकें नम, सहमे तन,
ये है पीड़ा की बेरा।।

स्वाद वही,
शराब वही,
बस बदल गया रसना है।
नकाब वही,
फसाद वही,
बस धीरे–धीरे फँसना है।।
रस भी झूठा, सरफांस भी झूठा,
झूठा पुलिस का घेरा।
पलकें नम, सहमे तन,
ये है पीड़ा की बेरा।।

नारी की करूण पुकार वही,
गठबंधन सरकार वही,
बस चेहरा बदल गया।

Scanned with OKEN Scanner

दहेज की बात वही,
लगन–बारात वही,
बस सेहरा बदल गया।।
चेहरा भी झूठा, सेहरा भी झूठा,
झूठा तेरा बसेरा।
पलकें नम, सहमे तन,
ये है पीड़ा की बेरा।।

फाग पिचकारी वही,
दफ्तर सरकारी वही,
बस दूषित सोच हो–ली।
पटाखे रंग वही,
अन्ना की जंग वहीं,
बस ज्योति बिन दिवा–ली।।
होली भी झूठी, दिवाली भी झूठी,
झूठा है छेर–छेरा।
पलकें नम, सहमे तन,
ये है पीड़ा की बेरा।।

कविता वनिता वही,
कहानी रूमानी वही,
बकवास सारी रचना है।
अपराधी के काटो अंग,
छेड़ो जंग,
बस यही कहना है।।
रचना भी झूठी, कथा भी झूठी,
ये है जंग की बेरा।
पलकें नम, सहमे तन,
ये है पीड़ा की बेरा।।
–––––000–––––

Scanned with OKEN Scanner

1. दामिनी – दिल्ली में 16 दिसम्बर 2012 को सामूहिक अमानवीय कृत्य से पीड़ित लड़की का छद्म नाम (समाचार–पत्र अनुसार) है। निर्भया नाम की इस लड़की का देहावसान 31 दिसम्बर 2012 को हुआ। मौत का समाचार पढ़ने के बाद, नये साल के लिए 31 दिसम्बर की रात को 03:00 बजे यह कविता लिखी गई।

2. ये है पीड़ा की बेरा – पूरी कविता में इस पद के स्थान पर 'स्वागत दो हजार 13' लिखा गया था। बाद में इसे संशोधित किया गया।

Scanned with OKEN Scanner

प्रकृति की पीड़ा

रोती हुई बेटी ने पुकारा, करूण स्वर में पिता को।
प्रकृति इतनी बेरहम क्यों ? मुझे यह बात बता दो।।

प्रकृति की गोद में पले,
और बढ़े नीलाम्बर तले।
हम उसी राह के तीर्थ राही,
जिस पर पूर्व राही चले।।
राही राह में धँस गए, कहाँ खोजूँ भाई की चिता को।
प्रकृति इतनी बेरहम क्यों ? मुझे यह बात बता दो।।

'बादल फटा, जमीं धँसी,
जल जहर हो चला।
कहीं लाशों का ढेर,
तो कहीं आदमी अधजला।।
लाशों में माँ कौन ? कैसे पहचानूँ बहन लता को।
प्रकृति इतनी बेरहम क्यों ? मुझे यह बात बता दो।।

घर बनाये जंगल में,
आंगन नदी में।
प्रकृति को रौंद डाला,
इक्कीसवीं सदी में।।
मौसम विज्ञान की अनदेखी! किसकी खता ? जता दो।
प्रकृति इतनी बेरहम क्यों ? मुझे यह बात बता दो।।

मर्माहत बेटी ने झकझोरा,
पिता को पुकारा।

परन्तु पिता मौन !
नहीं पूछा कौन ?

Scanned with OKEN Scanner

चहुँ ओर दुख, दर्द और मातम का महाकाल था।
वहाँ पिता से नहीं, पिता के शव से सवाल था।।

-----000-----

टीपः–16 जून 2013 को उत्तराखण्ड में प्राकृतिक आपदा से विशाल जन–धन की हानि हुई थी।

Scanned with OKEN Scanner

प्रलय की पीड़ा

जग में कभी कभी, ऐसा भी होता है।
प्रखर प्रलय भी, फफककर रोता है।।

लम्बी लम्बी सड़कें,
बड़े बड़े पुल।
ऊँची ऊँची इमारतें,
और सारे स्कूल।
मिल और कारखाने,
जो देते कार्बन धूल।
सारे प्रलय में तब्दील,
और हो जाते हैं गुल।
पर जब गरीब, अपना घोंसला खोता है।
प्रखर प्रलय भी, फफककर रोता है।।

बाबा बलत्कारी,
नेता अपराधी।
महकमा सरकारी,
शराबी जुआरी।।
करते कारनामें ये,
उलूल जुलूल।
सारे प्रलय में तब्दील,
और हो जाते हैं गुल।
पर जब गर्भस्थ शिशु, चिर निद्रा में सोता है।
प्रखर प्रलय भी, फफककर रोता है।।

बलशाली का बल,
खलनायक का खल।
दलदल रूपी दल,
और संपत्ति अचल।।

Scanned with OKEN Scanner

अस्तित्व सबका मिटता,
नाशवान है इनका मूल।
सारे प्रलय में तब्दील,
और हो जाते हैं गुल।
पर जब बेबस का पसीना, निष्फल होता है।
प्रखर प्रलय भी, फफककर रोता है।।

काम मद क्रोध,
अहंकार ईर्ष्या लोभ।
मद्यपान उत्कोच,
पाप पाखण्ड सोच।।
कुकर्म कुत्सित भावना,
साथ में मानवीय भूल।
सारे प्रलय में तब्दील,
और हो जाते हैं गुल।
पर जब सत्य प्रेम, अपना वर्चस्व खोता है।
प्रखर प्रलय भी, फफककर रोता है।।

प्रलय में–
धन धरा धर्म डूबे, जन जरा जर्म डूबे।
मम् तव शर्म डूबे, शुष्क निष्ठुर मर्म डूबे।।

प्रलय ने प्रतिवाद किया–
प्रलय में कुछ बचे न बचे।
पर प्रणय जरूर बचे।।

–––––000–––––

Scanned with OKEN Scanner

पेड़ की पीड़ा

बीज ने पेड़ से कहा– पापा, मुझे तुम्हारी खता बता दो।
वरन् जिसने तुम्हें नोचा, उसका पता बता दो।।

हरी भरी वादियाँ,
नैनों की प्यास बुझाती हैं।
दिमाग को ताजगी दे,
समस्या का हल सुझाती हैं।।
हरियाली हर ली गई, मुझे तुम्हारी खता बता दो।
वरन् जिसने तुम्हें नोचा, उसका पता बता दो।।

मिट्टी के रक्षक हो,
बाढ़ के भक्षक हो।
प्राण–वायु के उत्पादक,
जल के संरक्षक हो।।
तना, शाखा क्षरण हुई, मुझे तुम्हारी खता बता दो।
वरन् जिसने तुम्हें नोचा, उसका पता बता दो।।

पुष्पित हो ईश–शीष पर इतराते,
कभी फलित हो क्षुधा मिटाते।
औषधि हो तन तकलीफ तारते,
तो कभी पेय सुधा सरसाते।।
पेड़, पत्ते पतन के पास, मुझे तुम्हारी खता बता दो।
वरन् जिसने तुम्हें नोचा, उसका पता बता दो।।

पेड़ ने कहा–
बेटा!
तू अंकुरित मत होना।
बाल्यावस्था दातून बन ग्रास हो जाएगी।

Scanned with OKEN Scanner

जवानी चूल्हे की राख हो जाएगी।।

बेटा!
तू पुष्पित मत होना।
गले में हार बन मुड़ जाओगे।
वरन् इत्र बन उड़ जाओगे।।

बेटा!
तू फलित मत होना।
मानव को मन का भाता है,
पर्यावरण का चेत नहीं।
काजू, बादाम तन के खाता है,
पर तू नाश्ते का मेज नहीं।।

बीज को अपने कुटुम्ब का अपराधी मिल गया।
पर करे क्या? मानव को तो स्वार्थ निगल गया।।
पर्यावरण संरक्षण संवर्धन का ख्याल खिसक गया।
विश्व मानव समुदाय संकट से और चिपक गया।।

पेड़ मुस्कुराया। अंतः पीड़ा बताया–
मानव हमें सताता है, काट गिराता है।
छाल निकालता है, आग में जलाता है।।
हम इसे ऐसी सजा दें, जोर का मजा दें।
इनकी साँसों को रोकें और पानी चुरा लें।।

कब तक हम शिकार हों, चलो अपनी संख्या घटा लें।
मानव की तरह क्यों न हम भी, पुरूष नसबंदी करा लें।।

-----000-----

Scanned with OKEN Scanner

पवन की पीड़ा

स्वच्छ हूँ, मधुर हूँ, मंद–मंद समीर हूँ;
साँस बन प्राण हुआ।
प्रदूषित गैस के मिश्रण से,
मैं पूरा–पूरा बदनाम हुआ।।

अंग्रेजियत हवा मत बहने दो,
स्वतः मुखड़ा मुड़ जाता है।
पश्चिम से हवा मत चलने मत दो,
देह से कपड़ा उड़ जाता है।।
पश्चिमी सभ्यता अनुकरण से,
देशी संस्कृति का अवसान हुआ।
प्रदूषित गैस के मिश्रण से,
मैं पूरा–पूरा बदनाम हुआ।।

मिल कारखाने ऊपर मत बहने दो,
प्रदूषित वातावरण कर जाता हूँ।
ग्लोबल वार्मिंग का कारक बनता,
जन–जन में जहर भर जाता हूँ।।
जहरीली गैस उत्सर्जन से,
सर्व जन–जीवन विरान हुआ।
प्रदूषित गैस के मिश्रण से,
मैं पूरा–पूरा बदनाम हुआ।।

तेज आँधी बन छत मत उड़ने दो,
धीमे दीप–लौ बुझा जाता हूँ।
पवन हूँ, पेड़, पक्षी, प्राणी की पसंद,
हर साँस में समा जाता हूँ।।
बहना है मेरा गुण,
बहक जाने से मैं नमक हराम हुआ।
प्रदूषित गैस के मिश्रण से,
मैं पूरा–पूरा बदनाम हुआ।।

Scanned with OKEN Scanner

काश !
बुरे विचार मुझमें बहते नहीं,
सिर्फ सुसंस्कृति के तत्त्व रहते।
अंधी आंधी मुझे कहते नहीं,
परम प्राण पवन नित्य रहते।।

सरल, सहज चित्रित हूँ, दिशाहीन, अनियंत्रित हूँ।
मेरा दोष सिर्फ इतना कि, मैं भावना से अपरिचित हूँ।।

कभी कारखाने के धुएँ कार्बन,
कभी जल–जीवन के वाष्प बादल।
कभी स्वच्छ सुमधुर शनैः समीर,
तो कभी चक्रवात सुनामी पागल।।

मैं पवन हूँ, पकड़ो न, बहने दो।
अकेला हूँ, अच्छा हूँ, रहने दो।।

–––––000–––––

पुष्प की पीड़ा

मेरा खिलना, झूमना, सभी प्राणियों का प्रेम गीत होता है।
पर प्रकृति ऐसी मेरी, कि रोना भी हँसना प्रतीत होता है।।

भक्ति राजसी गद्दे में नहीं,
और न हि छाँव तले।
भगवान से बड़े भक्त कहीं,
भक्त वही जिसके पाँव जले।।
भक्त के जले पाँव तले आऊँ, तब चहुँ ओर संगीत होता है।
पर प्रकृति ऐसी मेरी, कि रोना भी हँसना प्रतीत होता है।।

देवों के शीष पर चढ़ूँ,
या विनायक गणेश पर।
दुर्गा, काली, सरस्वती,
या कैलाशपति महेश पर।।
शहीद के शव पर सम्मान पाऊँ, कभी–कभी नसीब होता है।
पर प्रकृति ऐसी मेरी, कि रोना भी हँसना प्रतीत होता है।।

मंच पर विराजे नेता,
जिसकी करतूत जाली हो।
साधू की शर्मनाक संगत,
जिसकी नीयत काली हो।।
काली–जाली करतूतों पर अर्पण, मेरा कर्म–रीत होता है।
पर प्रकृति ऐसी मेरी, कि रोना भी हँसना प्रतीत होता है।।

कर्मठ, ईमानदार, सत्य के,
गले मिलना चाहूँगा।
शहीद का खून– पसीना गिरे,
वहाँ खिलना चाहूँगा।।
शहीद की पत्नी के कदम चुमूँ, ऐसा भाग्य पुनीत होता है।
पर प्रकृति ऐसी मेरी, कि रोना भी हँसना प्रतीत होता है।।

Scanned with OKEN Scanner

पुष्प ने कहा,
मेरा एक पैमाना हो।
मैं उगूँ वहाँ,
जहाँ बीरों का ठिकाना हो।।

स्पर्श से उनके, मुरझाऊँ,
जो नेता दागी हो।
मुरझाते ही सड़ जाऊँ,
जो नेता कामी हो।।

मेरी हार उस गले में होती है,
जिसके दुष्मन की हार होती है।
बलत्कारी बाबा की बात नहीं,
यह बीर की तलवार होती है।।
तेज तलवार मेरी प्रेरणा से,
हमेशा चौकन्नी धारदार होती है।
धार चौकन्नी वहाँ होती है,
जहाँ खिले पुष्प की हार होती है।।

मुझे खिलने दो, खिलना मेरी जिंदगी है।
बीरों को छोड़, मिलना शेष दिल्लगी है।।

-----000-----

Scanned with OKEN Scanner

परिवहन की पीड़ा

सुबह–सुबह बाजू से गुजरा,
उसने थूक दिया दाहिनी तरफ।
नहा धोकर स्वच्छ था,
पड़ी चेहरे पर थूक की परत।।
उसे पान खाना मना है।
जिसे गाड़ी पर चलना है।।

क्यों मारते हैं कट,
जब बैठती है लड़की पीछे।
वही भागते हैं झट,
लड़की देख लेती है जिसे।।
उसे हीरो नहीं बनना है।
जिसे गाड़ी पर चलना है।।

शाम का समय था,
प्रेम के पंछी सैर पर निकले।
कीड़े घुसे आँख में,
तो वापसी अस्पताल चले।।
हेल्मेट जरूर पहनना है।
जिसे गाड़ी पर चलना है।।

मस्ती में सुनते गाना,
राह पर निकल लिया।
हार्न को सुना नहीं,
ट्रक ने कुचल दिया।।
ईयरफोन से गीत नहीं सुनना है।
जिसे गाड़ी पर चलना है।।

Scanned with OKEN Scanner

शाम को निकले मयखाने से,
हिलते डुलते काँपते।
मौत को गले लगाये,
दुर्घटना के वास्ते।।
दारू से दूर रहना है।
जब गाड़ी पर चलना है।।

रात को तेज चले,
सामने गाड़ी, घबरा गए।
लाईट को डीपर नहीं,
आपस में टकरा गए।।
रात को धीरे, संभलना है।
जिसे गाड़ी पर चलना है।।

सुविधा का साधन हूँ,
परिवार का वाहन हूँ।
सर्व जन हित में,
परिवहन का धन हूँ।।

यातायात के नियम पर जो चलेगा।
मद रहित, सरल भाव से पलेगा।
मौत भी आकर इनसे दूर टलेगा।
अनमोल जिंदगी कभी न छलेगा।

सुविधा का साधन हूँ, मुझसे प्रेम दोस्ती कर लो।
वरन् यम का वाहन हूँ, जीवन सस्ती कर लो।।

-----000-----

Scanned with OKEN Scanner

पशु की पीड़ा

मानव गुण को यदि मानवता कहें,
और दोष को पशुता।
तो पशु गुण को क्या पशुता कहें ?
यह बात मुझे बता।।

कुत्ते की वफादारी पर शक नहीं,
इस पर सबका मत एक बना।
मावन की नीच हरकत पर,
कुत्ते से उसकी क्यों तुलना ?
कभी चोर भगाये, अपराधी लाये,
पुलिस का खोजी कुत्ता।
पशु गुण को क्या पशुता कहें ?
यह बात मुझे बता।।

गधे पर लाद दो माल सारे,
न वह थके, न हारे।
मानव के कमजोर ज्ञान पर,
उसे गधे क्यों पुकारे ?
शांत है, सरल, सहज है।
इसमें गधे की क्या खता ?
पशु गुण को क्या पशुता कहें ?
यह बात मुझे बता।।

गाय का बछड़ा हल जोते,
पयपान से खुश नाती–पोते।
नारी वर्ग की जुबानहीनता पर,
ये गाय का पर्याय क्यों होते ?

Scanned with OKEN Scanner

बलशाली बैल की माँ है,
देती पौष्टिक दूध का पता।
पशु गुण को क्या पशुता कहें ?
यह बात मुझे बता।।

इक्का गाड़ी में घोड़ा,
हाथी सरकस में छाया।
शेर–चीते पिंजरे में,
भालू मदारी को भाया।
पशु को मानव ने कैद किया,
पर पशु का मन नहीं रहता।
पशु गुण को क्या पशुता कहें ?
यह बात मुझे बता।।

पशु ने पुकारा–
मानव है पर्यावरण का घातक,
ग्लोबल वार्मिंग का कारक।
जीव–जंतु का संहारक,
मनोरम प्रकृति का नाशक।।

अनैतिकता,स्वेच्छाचारिता; भ्रष्टाचारिता,रूग्ण मानसिकता।
असहिष्णुता,कपटधर्मिता; अश्लीलता और घोर नीचता।।
यदि यह लक्षण पशुता है, तो मनुष्य ही पशु क्रूर है।
क्योंकि यह पशु के गुण क्या, दुर्गुण से भी दूर है।।

पशुता से वास्ता नहीं, अतः पशु–नाम बदल दो।
अगर नाम कोई न मिले तो,
हे मानव और पशु! आपस में ही नाम बदल लो।।

–––––000–––––

Scanned with OKEN Scanner

प्रभात की पीड़ा

होते ही प्रभात लोग,
करते एक दूजे को सुप्रभात।
प्रभात की प्रभा का,
तेज भुला पहुँचाते आघात।

सुप्रभात करते ही–
क्या सु से सुखद होता है प्रभात,
क्या सु से सुंदर होता है प्रभात ?
क्या सु से सुयश होता है प्रभात,
क्या सु से सुशील होता है प्रभात?

कर्म से हम प्रभात को,
करते काली रात।
प्रभात की प्रभा का,
तेज भुला पहुँचाते आघात।।

सु से सुबह होते ही–
लोग सु में बहक जाते हैं।
सुध सारी खोकर सुर सुरा
सुंदरी से महक जाते हैं।।

सुबह इसी सु में,
बहने का नाम नहीं।
इससे अच्छा तो कु,
कुसुम का काम सही।।

Scanned with OKEN Scanner

चंचल मन बहक गया,
शुभ सुबह पर कुठाराघात।
प्रभात की प्रभा का,
तेज भुला पहुँचाते आघात।।

प्रभात में प्रभा,
तब लज्जित होती है।
हया की मर्यादा,
जब खंडित होती है।।

अश्लीलता की सेज,
जब सज्जित होती है।
शालीन सज्जनता,
तब दंडित होती है।।

श्लील का शील हरण,
आयी नारी पर आपात।
प्रभात की प्रभा का,
तेज भुला पहुँचाते आघात।।

पशुता, मानवता पर,
भारी पड़ती है।
क्रुरता पूरे वेग से
ठहाके लगा हँसती है।।

नशा नाश के साथ,
बोतल में थिरकती है।
अबला दहेज की
बेदी पर सिसकती है।।

Scanned with OKEN Scanner

सुबह जब बोतल में बंद है,
तो रात की क्या बात।
प्रभात की प्रभा का,
तेज भुला पहुँचाते आघात।।

प्रभात फड़फड़ाया–
मेरे होते ही चोरी,
छल प्रपंच और दुर्घटना।
सिलसिले वार
नगरों में बम का फटना।
जाति धर्म और
सम्प्रदाय पर लोगों का बँटना।
दंगा, हिंसा, खून
काटना और कटना।

यदि इसी का नाम प्रभात है, तो प्रभात से वास्ता तोड़ दूँ।
मेरी जिंदगी से दूर जा सूर्य, काली रात से नाता जोड़ लूँ।।

-----000-----

Scanned with OKEN Scanner

परमेश्वर की पीड़ा

रूप बदलकर परमेश्वर, एक नगर में गया।
हतप्रभ रह गया, देख नजारा नया।।
चोर पुलिस के हाथों पर,
कड़ी बांधे घसीट रहा था।
चोरों का सरदार,
थानेदार को पीट रहा था।।
थानेदार गिड़गिड़ाया–
मुझ पर घूसे–डण्डे से न खेलो।
पिछले हफ्ते तुमने,
जो पगार दिया था, उसे ले लो।।

सुरक्षा व्यवस्था पर आँसू बहा, आगे का रूख किया।
अब की बार नगर ने नहीं, झोपड़ पट्टी ने दुख दिया।।
अंदर झाँका तो उसने देखी एक काया।
इंसान के स्वरूप में दीवाल पर एक छाया।।
छाया की आँखों से आँसू झड़ रहे थे।
माँ–बेटा बासी के लिए लड़ रहे थे।।

फिर नगर छोड़ गाँव की ओर चला।
नाले के समीप एक नर ने उसे छला।।
राजा के भेष में, मुकुट किरीट पर बांधा था।
रात में नाटक खेला, सुबह इधर भागा था।।
राजा के पीछे वह लग गया।
चलते–चलते थक गया।।
राजा एक घर में घुसा, वह प्रतीक्षा में बाहर बैठा भला।
फटे कुरते, मिट्टी गोबर धरते कब निकला, पता न चला।।

Scanned with OKEN Scanner

निराश होकर अबकी बार, मंत्री निवास घंटी को बजाया।
देख नजारा अंदर का, उसकी आँखों ने लजाया।।
श्रीमती के शयन कक्ष को, नौकर सजा रहे थे।
बैठक कक्ष में मंत्री जी, पी.ए. के पैर दबा रहे थे।।

पीड़ित होकर गाँव पुनः वापस आया।
नंगे बच्चों को कीचड़ से सने पाया।।
उनके दर्द कई तरह के और विषम थे।
दर्जे में भिखमंगे से भी कम थे।।

फिर जैसे ही बढ़ा,
आदमी औरत को घसीट रहा था।
गर्भवती महिला को,
उसका सगा जेठ पीट रहा था।।
उसने औरत को डंडे से ठोंका,
दर्शक में से किसी ने न टोका।

दृश्य को देख परमेश्वर चौंका,
क्या कलियुग में आता है ऐसा भी मौका।।
असमंजस में वह सोचता,
आगे चला जा रहा था।
देखा, भाई की मौत में,
भाई गाना गा रहा था।।
जीते जी तीन फीट जमीन के लिए मुझे मारा।
अब जमीन क्या ? हुआ मेरा, धन सारा।।

मन खिन्न होने पर,
जंगल की ओर भाग रहा था।
ठिठक गया देखकर,
नक्सली मुर्दे पर नाच रहा था।।

Scanned with OKEN Scanner

देख सबको परमेश्वर की पीड़ा का ठिकाना न था।
संतानों में इतना कुभेद, ऐसा जाना न था।।
व्यवस्था पर ऐसा विचलन माना न था।
वर्ग विषमता को नजदीक से पहचाना न था।।

परमेश्वर ने पीड़ाभिव्यक्ति की–
लोगों में सहिष्णु, प्रेम हो और सबका शीतल छाँव हो।
मेरी निष्ठा में न सही, स्वार्थपरता में सम भाव हो।

–––––000–––––

Scanned with OKEN Scanner

पुरूषार्थ की पीड़ा

धर्म से ईश्वर पास मिले,
आशा एवं विश्वास मिले।
शांति अनायास मिले,
और भक्त को खास मिले।।
पर राजनीति घुसी, सांप्रदायिक दंगे हुए।
हिंसा, आगजनी, सड़क पर लोग नंगे हुए।।
लोगों ने धर्म के अर्थ बदल दिए।
पुरूषार्थ छोड़ कुमार्ग पर चल दिए।।

अर्थ से परिवार चले,
देश की सरकार चले।
वाणिज्य, व्यापार चले,
और धनिकों की कार चले।।
पर कालाबाजारी घुसी, सट्टा और घोटाला हुए।
गरीब, और गरीब, अमीर मालदार लाला हुए।।
लोगों ने अर्थ को व्यर्थ चंचल किए।
पुरूषार्थ छोड़ कुमार्ग पर चल दिए।।

काम गृहस्थ का आधार,
बाकी सभी निस्सार।
हो संयमित इसका आचार,
तब कामना होती साकार।।
पर वासना घुसी, जगह–जगह दुष्कर्म हुए।
कर्म पर बल नहीं, चहुँ ओर अधर्म हुए।।
लोगों ने कामदेव–रति को मसल दिए।
पुरूषार्थ छोड़ कुमार्ग पर चल दिए।।

Scanned with OKEN Scanner

मोक्ष से परम मुक्ति वह पाये,
जो धर्म– राह पर अर्थ कमाये।
जो सत्कर्म को निष्काम अपनाये,
भविष्य के लिए प्रारब्ध बनाये।।
पर लालच घुसी, पाप दिन–रात भए।
अपराध में मोक्ष क्या? हवालात गए।।
साधू ने मोक्ष के बहाने कली कुचल दिए।
पुरूषार्थ छोड़ कुमार्ग पर चल दिए।।

धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, चार हैं।
पुरूषार्थ के चारों प्रकार हैं।।
जो जीवन के आधार हैं।
करते वर्तमान, भविष्य साकार हैं।।

पर पुरूषार्थ छोड़ स्वार्थ में लगे।
अपना अहित करने परमार्थ तजे।।

पुरूषार्थ ने परोपकार किया–
हे मनुष्य!
मत कर बाह्याडम्बर, मिथ्याभिमान।
बल, बुद्धि, विद्या के तुम खान।।
पुरूषार्थ अपनाकर बनो महान।
वरना तुम और पशु एक समान।।

–––––000–––––

Scanned with OKEN Scanner

परीक्षा की पीड़ा

आज परीक्षा में ऐसा भी!
पैसे लाओ, प्रमाण–पत्र पाओ।
परीक्षा पर लगे इल्जाम,
इसका परीक्षण कराओं।।

चार परीक्षार्थी– जान, मोहन, सोहन और रेखा।
एक ईमानदारी से लिखा, दुजे ने आगे का देखा।।
तीज होशियार दो के आगे, चौथे ने लाया चिट लेखा।
ईमानदार हुआ फेल, शेष ने अव्वल में नाम देखा।।

परीक्षक दोषी या निरीक्षक, कौन है दोषी बताओ।
परीक्षा पर लगे इल्जाम, इसका परीक्षण कराओं।।

संघ लोक सेवा आयोग, की परीक्षा जो पास करे।
उसके ऊपर दूसरी पास, नेता हुक्म राज करे ?
सांसद विधायक के लिए, परीक्षा आधार करें।
मंत्री पद पर चयन, प्रावीण्य सूची अनुसार करें।।

राजनीति गैर परीक्षा क्यों ?
संवैधानिक संशोधन लाओ।
परीक्षा पर लगे इल्जाम,
इसका परीक्षण कराओं।।

मौखिक परीक्षा पर ऐसा हो विधान।
झूठ पकड़ने की मशीन का हो काम।।
अंतः भावना को समिति ले पहचान।
तब अधिकारी मंत्री होंगे निष्ठावान।।

Scanned with OKEN Scanner

चयन समिति कक्ष में, पारदर्शिता को अपनाओ।
परीक्षा पर लगे इल्जाम, इसका परीक्षण कराओं।।

नहीं चलेगी रिश्तेदारी, और न पहुँच सरकारी।
परीक्षण उसी से कराएँ, जो हो निःसंतान धारी।।
परीक्षा में न हो सहिष्णु, न प्रेम अति भारी।
मेहनत करें जी तोड़, और अपनाएँ ईमानदारी।।

सीता ने दी अग्नि परीक्षा,तुम इसे मत भुलाओ।
परीक्षा पर लगे इल्जाम, इसका परीक्षण कराओं।।

-----000-----

Scanned with OKEN Scanner

प्रांत की पीड़ा

मैं परा–अन्त हूँ, परिन्दा–सा,
मुझे सत्ता ने पकड़ लिया।
विश्व परिवार का अंश हूँ,
पर क्षेत्र ने जकड़ दिया।।

माँ धरती पिता आकाश,
चार भाई में अग्रज एशिया।
बुद्धि में यूरोप तेज,
खेल में अनुज आस्ट्रेलिया।।
सागर बुआ की गोद में,
सुख पाता भाई अफ्रीका।
काश रक्षा बंधन में तत्पर,होतीं बहनें अमरीका।।
पर सीमा पार युद्ध ने,परिवार पूरा गड़बड़ किया।
विश्व परिवार का अंश हूँ,
पर क्षेत्र ने जकड़ दिया।।

कभी सीमा पर गोला बारी,
कभी धरम पर कटारी।
कभी शक्ति प्रदर्शन भारी,
कभी आतंक की महामारी।।
कभी हिन्दू को मुस्लिम ने,
मुस्लिम को हिन्दू ने रगड़ दिया।
विश्व परिवार का अंश हूँ,
पर क्षेत्र ने जकड़ दिया।।

सीमा रेखा ने देश को बाँट दिया,
घुसपैठ किया तो काट दिया।
खाड़ी देश ने बदतमीजी की,
तो अमेरिका ने डाँट दिया।।

Scanned with OKEN Scanner

छोटे देश की अहमियत नहीं ?
कभी भी तमाचा जड़ दिया।
विश्व परिवार का अंश हूँ,
पर क्षेत्र ने जकड़ दिया।।

ताकतवर ने जब चाहा,
फोड़ दिया,जोड़ दिया।
नेता ने सत्ता स्वार्थ में,
संसार सारा तोड़ दिया।।
कभी काले, गोरे पर,
आतंकवादं पर लड़ लिया।
विश्व परिवार का अंश हूँ,
पर क्षेत्र ने जकड़ दिया।।

प्रांत का आह्वान–
संयुक्त राष्ट्र के सारे नेता,
मिल जुल करें ये तय।
न क्षेत्र पर लड़ें, न धर्म पर,
न हो आतंक का भय।।
सर्व जन मिल गाएँ गीत,
विश्व का, हो तन्मय।।।
विश्व बन्धुत्व हो, और हो,
एक सुर, एक लय।।।।
भारत माता के साथ हो,
विश्व विधाता की जय।।।।।

–––––000–––––

Scanned with OKEN Scanner

प्रजा की पीड़ा

सरकार बनाई प्रजा ने, तो क्या प्रजा–हित में काम हुआ।
स्वार्थ में पड़ गई सरकार, तो प्रजा का चक्काजाम हुआ।।

ठीक वक्त पुलिस न जागी,
न प्रजा की सूध ली।
पीड़िता ने की आत्म–हत्या,
ये पुलिस किसकी कठपुतली ? (1)
पुलिस प्रजा की रक्षा के लिए, तो क्या स्त्री–अस्मिता का मान हुआ।
स्वार्थ में पड़ गई सरकार, तो प्रजा का चक्काजाम हुआ।।

मुफ्त अनाज का चलन हुआ,
गरीबी का आंशिक दमन हुआ।
किसान का पेट भर तो गया,
पर परिश्रमी किसान का पतन हुआ।।
किसान निठल्ला, मयखाने की ओर, जमीं बंजर,खेत विरान हुआ।
स्वार्थ में पड़ गई सरकार, तो प्रजा का चक्काजाम हुआ।।

जब–जब चुनाव आया,
वादा–ही–वादा पाया।
रेत के घर जैसे,
हाथ कुछ नहीं आया।।
पायी कुर्सी, वादा भूला, वह पाँच साल अन्तर्ध्यान हुआ।
स्वार्थ में पड़ गई सरकार, तो प्रजा का चक्काजाम हुआ।।

हमने दिया मत वैसा,
मौलिक कर्त्तव्य समझ जैसा।
काम करने की जब आयी बारी,
तब उसने मांगा पैसा–पैसा।।

Scanned with OKEN Scanner

जनहित हो या व्यक्तिगत, जन–जन हमेशा परेशान हुआ।
स्वार्थ में पड़ गई सरकार, तो प्रजा का चक्काजाम हुआ।।

मैं सीधा–साधा प्रजा भला।
प्रतिनिधि ने मुझे छला।।

मेरा मत यह कि,
मैं संविधान में संशोधन, इस बार चाहता हूँ,
पाँच साल में कभी भी, कई बार चाहता हूँ।
जब मेरा निर्वाचित नेता, अन्याय पर चले,
तब मत वापस लूँ, यह अधिकार चाहता हूँ।। (2)

–––––000–––––

Scanned with OKEN Scanner

(1) दैनिक भास्कर रायपुर 15 फरवरी 2014 पृष्ठ 2 के अनुसार छ.ग. विधानसभा भवन रायपुर में विधायक तेजकुँवर नेताम और अनिता भेंड़िया ने ध्यानाकर्षण में यह मुद्दा उठाया कि 16 दिसम्बर 2013 को अंबागढ़ चौकी में चोरपानी गाँव की एक महिला ने गाँव के एक युवक के खिलाफ दुष्कर्म की शिकायत की। पुलिसकर्मियों ने रिपोर्ट लिखने के बजाय महिला को बेइज्जत कर थाने से भगा दिया। पीड़ित महिला ने लोक–लाज के भय से और इंसाफ नहीं मिलने से निराश होकर 19 दिसम्बर को फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली।

(2) यह तभी सम्भव है जब चुनाव में ऑन लाईन वोटिंग हो। मतदाता जिस मतदान केन्द्र का निवासी हो, वहाँ से उसे एक कार्ड जारी हो जो फिंगर–प्रिंट मांगता हो। चुनाव के समय मतदाता कहीं से भी अपने क्षेत्र के प्रत्याशी को फिंगर प्रिंट के माध्यम से ऑन लाईन मतदान कर सके। इसमें मतगणना की आवश्यकता नहीं होगी। मुख्यालय में या कहीं से भी कोई भी व्यक्ति किसी प्रत्याशी को प्राप्त मतों की संख्या जान सकता है और विजयी उम्मीद्वार की पहचान कर सकता है। जब निर्वाचित उम्मीद्वार उसके मतदाता के अनुरूप कार्य नहीं करता है या अनुचित कार्य करता है तो उसका मतदाता कभी भी फिंगर–प्रिंट के माध्यम से अपना मत ऑन लाईन वापस ले सकता है जिससे उसका विजयी नेता हार की स्थिति में भी आ सकता है।

Scanned with OKEN Scanner

प्रधान की पीड़ा

मैं प्रधान हूँ परिवार का, हर सदस्य मेरी शान है।
पर संतान का मतभेद ही, मेरी पीड़ा का दास्तान है।।

29 पुत्र, पुत्री सात,
छोटा मुँह, बड़ी बात।
नजरें हर पर हमेशा,
चाहे दिन, चाहे रात
किसी पर आये संकट, सुलझाने पर होता मान है।
पर संतान का मतभेद ही, मेरी पीड़ा का दास्तान है।।

पंचवर्षीय योजना लाता,
साथ में विदेश नीति भी।
अंतः बहिर्सुरक्षा कंधे पर,
देश में कानून–रीति भी।।
देश हो दृढ़ स्वावलम्बी, यही मेरी हार्दिक अरमान है।
पर संतान का मतभेद ही, मेरी पीड़ा का दास्तान है।।

कहीं नक्सली का डेरा,
कोई आतंक से भयभीत।
कभी समंदर सुनामी,
किसी पर विपदा प्राकृतिक।।
संकट का समाधान करूँ, यह कृत्य स्वर्ग समान है।
पर संतान का मतभेद ही, मेरी पीड़ा का दास्तान है।।

Scanned with OKEN Scanner

कोई कालिख पोते,
कोई पोस्टर फाड़े।
कभी निंदनीय टीप,
तो कोई परोक्ष लताड़े।।
सबका सुन, सहन–मनन करना, प्रधान का काम है।
पर संतान का मतभेद ही, मेरी पीड़ा का दास्तान है।।

कोई संतान दागी,
देश द्रोही व बागी।
किसी के मुँह रिश्वत लागी,
ये कारक हैं पीड़ा के, जिससे होता मेरा अपमान है।
संतान का मतभेद ही, मेरी पीड़ा का दास्तान है।।

जाति से दूर हूँ, धर्म से परे, भाईचारे लाता हूँ।
प्रधान के दायित्व को, ईमानदारी से निभाता हूँ।।

पर मेरे अपनों ने सताया,
जन–जन को भरमाया।
जाति–धर्म के नाम पर,
जन–मत को हथियाया।।

मेरे पुत्रों !
मत यदि सत् है, तो उसकी टांग मत खींचों।
क्यों न वह विरोधी के हों, पूरी लगन से सींचों।।

----000----

Scanned with OKEN Scanner

पायल की पीड़ा

पायल(1) ने पूछा पायल(2) से,
मुझे तुम्हारी खता बता दो।
जिसने चुरायी तेरी छन–छन,
उसका पता बता दो।।

पायल'(1), सुन मेरा कहना,
सपना'(3) ने देखा सपना।
सधवा ने पाया अपना,
जिस–जिस ने तुझे पहना।।
सदा पहना नहीं, गहना यही,
मुझे तुम्हारी खता बता दो।
जिसने चुरायी तेरी छन–छन,
उसका पता बता दो।।

खुशनसीब है वह,
जिसके पग तू बजे।
मनोरथ सारी पूरी हो,
जिसके सर सेहरा सजे।।
पर पायल(2) पग से परे हुआ,
मुझे तुम्हारी खता बता दो।
जिसने चुरायी तेरी छन–छन,
उसका पता बता दो।।

नारी का श्रृंगार है तू,
चेहरे का मुस्कान।
धारक, धरा का सुंदर,
सुंदर सारा जहान।।

Scanned with OKEN Scanner

धारक की धरा धरी रह गई,
मुझे तुम्हारी खता बता दो।
जिसने चुरायी तेरी छन–छन,
उसका पता बता दो।।

पदमुक्त पायल(2) ने पैरवी की–
धूर्तों ने धारयित्री को धर,
धरा पर धड़ाम किया।
पायल(1) टूटी, घूंघरू बिखरे,
शीलहरण सरे आम किया।।
कभी मंदिरों में, कभी मनचलों ने,
फुसलाकर ये काम किया।
कभी दहेज के दानव ने,
देवी का दामन दाग किया।।

पायल(2) की प्रकृति छन–छन कर हँसी देना,
खुद की खुशी और लोगों को खुशी देना।

दरिदों ने रौंदा इसे यूँ,
कि पायल(2) फड़फड़ाकर रह गयी।
खुद की खुशी गई सो गई,
पायल(1) भी खुदकुशी कर गयी।।

पायल(2) परेशान–
मेरे करम का विधाता ! मुझे क्यों बनाया,
जब बनाया तो, क्यों छन–छन बजाया।
कभी वहशी ने, कभी दहेज लोभी ने सताया,
कभी डिस्को में, कभी बीयर बार में नचाया।।

Scanned with OKEN Scanner

पायल(2) घायल है देख,
बादल की घटा को।
नसीब नहीं इसका कि,
देखे इसकी छटा को।।

हे मेरे पालक के पोषक!(4)
पायल(1) का दर्द मिटा दो।
या सदा के लिए पैरों से,
पुनीत पायल(2) को हटा दो।।

-----000-----

Scanned with OKEN Scanner

(1) पायल एक नारी का नाम है। इसने अपने पैरों पर बजने वाला एक आभूषण पहना है।

(2) पायल एक आभूषण का नाम है। जिस पायल में घुंघरू रहते हैं वह पायल बजती है; जिसमें घुंघरू नहीं रहते, वह नहीं बजती। दोनों ही स्थिति में शुभ है। बजती हुई पायल के धारक को अधिक प्रसन्न माना जा सकता है क्योंकि जिस जड़–आभूषण से चेतन–सी आवाज आ सकती है, उसका धारक अधिक प्रसन्न तो होगा ही। वैसे पायल को पहनना ही शुभ है क्योंकि यह सौभाग्यकांक्षिणी और सौभाग्यवती का गहना है।

(3) सपना एक सौभाग्यकांक्षिणी बालिका का नाम है जो सौभाग्यवती बनने अर्थात् सधवा होने का सपना देखती है।

(4) पायल रूपी आभूषण के पालनकर्त्ता अर्थात् नारियों के पोषक अर्थात् मर्द जाति से यह निवेदन किया गया है कि पैरों की इस पायल को मत टूटने दो, मत बिखरने दो, इनके धारक अर्थात् नारियों की खुशियों को मत छिनो, नारियों पर अत्याचार मत करो। हे मर्द ! यदि ऐसा न कर सको तो पायल के पहनने वाली कन्याओं के इस सौभाग्यकांक्षिणी प्रतीक एवं नारियों के सौभाग्यवती प्रतीक को ही इस दूनिया से मिटा दो। दोनों का ही प्रतीक पायल नामक आभूषण है।

Scanned with OKEN Scanner

प्रेम की पीड़ा

हर बार होता है क्यों ऐसा।
पैसे से प्रेम है और प्रेम ही पैसा।।

बच्चा बड़ा होते ही कह डाला,
मुझे चाहिए पैसा और बाला।
उस प्रेम का कुछ मोल नहीं,
जिसने नौ मास पाला।।
माँ का अश्रु बहता है, निर्झर जैसा।
पैसे से प्रेम है और प्रेम ही पैसा।।

प्रेमी दो–चार कष्ट, उसका ढो क्या लिया,
प्रेयसी को लगा, वह उसका ही पिया।
उद्दीप्त लालसा के विकृत रूप ने कुछ ऐसा किया,
त्याग दिया उसे, जिसने 18 बरस जीवन दिया।।
बाप का सीना फटता है परवरिश कैसा।
पैसे से प्रेम है और प्रेम ही पैसा।।

धरती में खेला कूदा और किया बसेरा।
मिला अन्न,वसन, चाहे हो शाम सबेरा।।
प्रेम पूरित सबको, न तेरा न मेरा।
जब आयी पारी रक्षा की,तो मुँह क्यों फेरा।।
धरती का धड़ कटता है, आतंकवाद वैसा।
पैसे से प्रेम है और प्रेम ही पैसा।।

प्रिया ने प्रेम अपना, प्रिय नाम किया,
घर समाज त्याग, सर्वस्व दान किया।
गम को सारा उसका, अपना मान लिया,

Scanned with OKEN Scanner

उसकी सारी गलती पर, पर्दा तान दिया।।
प्रिया की त्रुटि– एक, क्षम्य नहीं; वह प्रेमी कैसा।
पैसे से प्रेम है और प्रेम ही पैसा।।

माँ का प्रेम ममता में,
प्रेमी का प्रेम व्यापार में।
साथी का समता में,
तो देश प्रेम न्यौछावर में।।

पर प्रेम हमने, उनका गंवाया।
प्रेम से प्रेम को न निभाया।।

प्रेम ने पुचकारा–
मैं प्रेम हूँ, पवित्र पसंद; सदा अपने पास रखो।
पत्थर दिल में भी पनपूँ, ऐसा प्रयास करो।।

–––––000–––––

Scanned with OKEN Scanner

प्रसाद की पीड़ा

पात्र हो, कुपात्र हो, सबके सिर पर हाथ फेरा।
प्रसाद का यही गुण, दुख का कारण बनता मेरा।।

बालि हो या शुक्राचार्य गुरू असुर।
लंकापति रावण हो या हो भष्मासुर।।
सबने पा लिया प्रसाद, भले ही छाये अंधेरा।
प्रसाद का यही गुण, दुख का कारण बनता मेरा।।

चोर भी गया मंदिर, बदमाश भी।
लगाया तिलक भाल, पाया प्रसाद भी।।
सबके हिस्सा में वही कृपा, चाहे हत्यारा चाहे लुटेरा।
प्रसाद का यही गुण, दुख का कारण बनता मेरा।।

कामी सन्यासी हो, या आयकर चोर।
भ्रष्ट नेता हो या अधिकारी रिश्वतखोर।।
सबने की पूजा अर्चना, किया मंदिर का फेरा।
प्रसाद का यही गुण, दुख का कारण बनता मेरा।।

ईसा पैगम्बर, ईश्वर अल्लाह।
करते न्याय, देते पनाह।।
क्यों नहीं दिखाते सबको एक राह?
एक सज्जनता की राह, दूजा करे गुनाह?

प्रसाद पछताया।
चाह को बताया।

प्रसाद जब वितरित हो, गॉड वहाँ अवतरित हो।
फिल्मी–सा कुछ पुष्प,उस पर पतित हो।।
ग्राही की भावना, गॉड से अवलोकित हो।

Scanned with OKEN Scanner

ऐसा कुछ चमत्कार वहाँ व्यवहृत हो।।
जिससे प्रसाद का गुण ऐसा निष्चित हो।
कि जब दुर्जन ले उसे, तो जहर मिश्रित हो।।

-----000-----

Scanned with OKEN Scanner

परम पीड़ा

जब जुर्म होता है,
अंधा रोता है।
आँखों का आदमी,
आँख बंदकर सोता है।।
अंधा देख न पाये, तो पीड़ा करम होती है।
पर आँख वाला न देखे, तो पीड़ा परम होती है।।

अन्याय के विरूद्ध आवाज में,
गूंगा भी हकलाता है।
हल्ला बोलने वाला जब न बोले
वह गूंगा कहलाता है।।
गूंगा बोल न पाये, तो पीड़ा करम होती है।
पर जुबान वाला न बोले, तो पीड़ा परम होती है।।

दुष्कर्म पीड़िता की पुकार को,
बहरा कान देता है।
काना–फूसी को सुन सकने वाला,
स्वयं को बहरा मान लेता है।।
बहरा सुन न पाये, तो पीड़ा करम होती है।
पर कान वाला न सुने, तो पीड़ा परम होती है।।

जहाँ बुद्धि की बात हो,
अल्प बुद्धिमान का लगाव होता है।
बुद्धिमान हाथ नहीं आता,
उसका तेज भाव होता है।।
बुद्धिमान बुद्धि नहीं लगाये, तो पीड़ा सहज होती है।
पर बुद्धिमान,शातिर बुद्धि लगाये, तो पीड़ा परम होती है।।

Scanned with OKEN Scanner

शिक्षा सागर है,
जिसका मोती सबकी हसरत है।
खोट है अगर
इसकी पोथी जग की नफरत है।।
शिक्षक शिक्षा न दे, तो पीड़ा सहज होती है।
पर वह गलत शिक्षा दे, तो पीड़ा परम होती है।।

जनता की रक्षा
पुलिस के हाथ में है।
जनता की कच्छा,
पुलिस के साथ में है।।
पुलिस रक्षक न बने, तो पीड़ा सहज होती है।
पर वह खुद भक्षक बन जाये, तो पीड़ा परम होती है।।

अन्याय पर न्याय की जीत,
न्यायालय दिलाता है।
पर न्यायाधीश(1) अन्याय करे,
तो न्याय सिर झुकाता है।
न्यायाधीश न्याय न करे, तो पीड़ा सहज होती है।
पर वह स्वयं अन्याय करे, तो पीड़ा परम होती है।।

नेता आगे,
तो जनता साथ देती है।
नेता भागे,
तो जनता लात देती है।।
नेता नेतृत्व न करे, तो पीड़ा सहज होती है।
पर वह स्वयं नेतृत्वहीन हो जाये, तो पीड़ा परम होती है।।

Scanned with OKEN Scanner

काम में न अवरोध हो,
न घमण्ड, न क्रोध हो।
अधिकार भी जाने,
साथ में कर्त्तव्य बोध हो।।
अधिकारी अधिकारविहीन हो जाये, तो पीड़ा सहज होती है।
पर वह अधिकार में लीन हो जाये, तो पीड़ा परम होती है।।

संत(2) को दिए दान से,
कई आश्रम तो चलते हैं।
पर सुख सुविधा से
साधू संत भी पलते हैं।।
श्री श्री 108 श्री को दान न दें, तो पीड़ा सहज होती है।
पर भूखे बच्चे को अन्न न दें, तो पीड़ा परम होती है।।

भगवान रूप चिकित्सक है,
दुख–दर्द का नाशक है।
समय पर न मिले,
तो यह प्राण घातक है।।
चिकित्सक पीड़ा न हरे, तो पीड़ा सहज होती है।
पर वह प्रसव–पीड़ा न हरे, तो पीड़ा परम होती है।।

सत्य का पक्ष वकील लेता है,
गवाह और दलील देता है।
कभी–कभी पेशेवर गवाह(3),
सत्य को जलील देता है।।
वकील न्याय का पक्ष हारे, तो पीड़ा सहज होती है।
पर वह अन्याय का पक्ष जीते, तो पीड़ा परम होती है।।

Scanned with OKEN Scanner

अभियंता नव निर्माण से,
स्थान शिखर पाता है।
कभी घटिया निर्माण से,
जीवन बिखर जाता है।।
अभियंता को यंत्र समझ न आये, तो पीड़ा सहज होती है।
पर वह कुतंत्र का खुद यंत्र बन जाये,तो पीड़ा परम होती है।।

पत्रकार के पत्र से,
पाठक खबर पाता है।
कभी ज्ञान–सीख,
तो कभी गदर लाता है।।
सत्य की खबर न छपे, तो पीड़ा सहज होती है।
पर असत्य खबर छपे, तो पीड़ा परम होती है।।

कवि–लेखनी में यह ताकत है,
कि काया कल्प कर दे।
किंचित को अधिक,
तो अति को अल्प कर दे।।
कवि की कविता अमर न हो, तो पीड़ा सहज होती है।
पर कविता का असर न हो, तो पीड़ा परम होती है।।

–––––000–––––

(1) समाचार पत्र– दैनिक भास्कर रायगढ़ फरवरी मार्च 2014 के अनुसार, महिला प्रशिक्षु वकील ने न्यायाधीश पर यौन–शोषण का आरोप लगाया था। अगस्त 2014 के अन्य समाचार में शीर्षक "महिला जज के उत्पीड़न का मामला संसद में " के अनुसार सांसद लेखी ने कहा, "यह मामला चौंकाने वाला है। महिलाओं को न्याय के रखवालों से भी असुरक्षा महसूस हो रही है। "

Scanned with OKEN Scanner

(2) राष्ट्रीय संत श्री चिन्मयानंद बापू द्वारा चपले (राबर्टसन) जिला–रायगढ़ छ.ग. में दिनांक 02 मार्च 2014 से 08 मार्च 2014 तक श्रीमद् भागवत कथा का प्रवचन किया गया। इसमें संत द्वारा रोज लिफाफे बांटे जाते थे और दान में श्रोताओं से हजारों/लाखों रूपये प्राप्त किये जाते थे।

(3) समाचार पत्र– दैनिक भास्कर रायगढ़ दिनांक 04 मार्च 2014 पृष्ठ 01 में प्रकाशित शीर्षक "पंकज संचोरा हाजिर हो... मुकदमे करीब 300, गवाह एक" के अनुसार, उज्जैन के इंदिरानगर में रहने वाले पंकज को पुलिस पिछले 24 सालों से गवाह बना रही है। पंकज ने बताया, "समन आता है, तब पता चलता है– मैं गवाह हूँ।"

------0000------

Scanned with OKEN Scanner

इस काव्य संग्रह में, मैं फिलहाल चौबीस प्रकार की पीड़ा से द्रवित हुआ हूँ। इसमें एक समानता है, जैसे- 'पीड़ा' का प्रथम अक्षर 'प' है, वैसे ही समस्त प्रकार की पीड़ा का प्रथम अक्षर भी 'प' है। इसकी शुरूआत 'प' की 'पहचान' की पीड़ा से होती है एवं समापन 'प' के 'प्रसाद' की पीड़ा एवं 'प' के 'परम', पीड़ा के साथ होता है। इसमें, मैं दूसरों की बात नहीं करता, मैं (स्वयं) मानव बनने की कोशिश में लगा हूँ। यदि पाठक भी इस संग्रह की अश्रुधारा से प्रभावित एवं इसमें प्रवाहित होकर नमकीन अश्रु की जगह मीठे जल का पान कर पाता है एवं पीड़ा का अहसास कर इस संसार को पीड़ारहित करने में अपना अल्प योगदान भी दे पाता है तो मानव बनाने का यह काव्य-संग्रह पूर्ण सार्थक हो जाएगा।

-कवि

Scanned with OKEN Scanner

प्रियंका पब्लिशिंग हाऊस

प्लॉट न.-26, 9 दुकान, पानीपेच,
झोटवारा रोड, जयपुर (राजस्थान) -302016
मो. 8955019001, 9636691655

Scanned with OKEN Scanner